Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 9 ~ Issue 3 (2021) pp: 56-60
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की नई प्रवृत्तियाँ

डॉ. रामकल्याण मीना
सह आचार्य राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
झालावाड़ (राज.) 326001

सारांष *–1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व–शक्ति संतुलन में बुनियादी परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगे। खाड़ी युद्ध की समाप्ति पर राष्ट्रपति बुश ने ''नई विश्व व्यवस्था'' की स्थापना का स्पष्ट संकेत दे दिया था। आज अमेरीका विश्व की एकमात्र महाशक्ति है। संयुक्त राष्ट्र संघ ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी वित्त संस्थाएँ भी उसकी मुट्ठी में है। विश्वभर में उदारीकरण, उदारवाद, लोकतंत्र, विकेन्द्रीकरण तथा बाजार अर्थव्यवस्था के अपनाए जाने से साम्यवाद की लोकप्रियता और भी कम हो गई। नाटो का पूर्व की और फेलाव हो रहा है। आज नाटो रूस के दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। राष्ट्रों के आपसी सहयोग से नये संगठनों का निर्माण हुआ है।*

मुख्य शब्द *:– प्रेस्ट्रोइका, ग्लासनॉस्ट, स्वतंत्रता, साम्यवाद, चौधराहट, अलकायदा, क्वाड़*

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था निरन्तर बदलती जा रही है और इसमें बदलाव का मुख्य कारण है समय–समय पर नई प्रवृत्तियों का उदय होना। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व शक्ति संतुलन में बुनियादी परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगे। खाड़ी युद्ध की समाप्ति पर राष्ट्रपति बुश ने ''नई विश्व व्यवस्था'' की स्थापना का स्पष्ट संकेत दे दिया था। यह रवैया अमेरीकी विदेश नीति में बहुत बड़ा परिवर्तन था क्योंकि पिछले कई वर्षों से वह संयुक्त राष्ट्र संघ से नाखुश था। मार्च–अप्रैल 2003 में ''ऑपरेशन इराकी फ्रीडम'' ने सद्दाम के शासन का ही अन्त नहीं किया अपितु संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में निहित सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा का भी अन्त कर दिया। वर्तमान में दुनिया बदल रही है। ये बदलाव हर क्षेत्र में हर हिस्से में हो रहे है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वित्तीय क्षेत्रों में अमेरीकी वर्चस्व घट रहा है और नए ढंग से शक्तियों का बटवारा हो रहा है। भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाएँ, एशिया के उदय की परिकल्पना को सुदृढ़ करती है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की नई प्रवृत्तियाँ :–

1. **सोवियत संघ का विघटन :–** सोवियत संघ के विघटन को 20 वीं शताब्दी की एक अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना कहा जा सकता है। जिस प्रकार 1917 में आई समाजवादी क्रांति के बाद सोवियत संघ के उद्भव ने 20 वी शताब्दी के आरम्भ में विश्व राजनीति को गहरे रूप में प्रभावित किया था उसी प्रकार बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में सोवियत संघ का विघटन भी विश्व राजनीति में परिवर्तन का एक महान स्रोत बना। 74 वर्षों तक एक महाशक्ति के रूप में विश्व राजनीति को प्रभावित करने के पश्चात् 1991 में सोवियत संघ का प्रेस्ट्रोइका तथा ग्लासनॉस्ट से उत्पन्न राजनीतिक उथल–पुथल तथा आर्थिक कमजोरी के कारण, विघटन हो गया। 31 दिसम्बर 1991 की मध्य रात्रि को सोवियत संघ का ध्वज उतार लिया गया तथा इसके स्थान पर रूस, जो सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राज्य बना, का ध्वज लहरा दिया गया, परन्तु इससे पहले सभी सोवियत गणराज्यों ने अपनी–अपनी स्वतंत्रताओं की घोषणा कर दी थी। ऐस्टोनिया, लाटविया तथा लिथुआनिया तो पहले ही सोवियत संघ से अपनी स्वतंत्रताएँ प्राप्त कर चुके थे। बाकी के गणराज्यों ने भी अपनी–अपनी स्वतंत्रताओं की घोषणा कर दी। सोवियत संघ उन्हें संघात्मक राज्य में बांध न रख सका। उनमें से 9 गणराज्यों ने एक ढीले परिसंघ, स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्र मण्डल की स्थापना कर ली। जार्जिया सी.आई.एस. से अलग ही रहा। इस प्रकार 1991 के वर्ष में सोवियत संघ का पूर्ण विघटन हो गया। सोवियत संघ इतिहास के पन्नों का एक अंग बन गया। रूस इसका उत्तराधिकारी राज्य बना तथा इसके 9 गणराज्यों ने मिलकर स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रमण्डल की स्थापना की। परन्तु न तो रूस और न ही यह राष्ट्रमण्डल किसी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में भूतपूर्व सोवियत संघ जैसी स्थिति प्राप्त करने में सक्षम बने। आंतरिक आर्थिक कमजोरी, राजनीतिक उथल–पुथल का वातावरण, जातिय हिंसा तथा युद्ध की उपस्थिति तथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता बनाए रखने की आवश्यकता रूस तथा अन्य स्वतंत्र गणराज्यों की शक्ति को सीमित बनाए रखा। रूस को पुराने राज्य की 3/4 जनसंख्या, भूक्षेत्र, स्रोत तथा परमाणु शस्त्र भण्डार प्राप्त हुए। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इसने भूतपूर्व सोवियत संघ केसभी उत्तरदायित्वों तथा दावों को ग्रहण कर लिया। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में रूस को स्थायी सदस्यता तथा वीटो शक्ति प्राप्त हुई। यह परमाणु चाबी का स्वामी भी बन गया।[1]

* Corresponding Author: डॉ. रामकल्याण मीना

2. **शीतयुद्ध का अन्त :–** द्वितीयविश्व युद्ध के बाद की विश्व राजनीति की प्रमुख विशेषता संयुक्त राज्य अमेरीका और सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध की राजनीति का चलन था। शीतयुद्ध एक वैचारिक संघर्ष था जिसमें दो विरोधी जीवन पद्धतियां उदारवादी लोकतंत्र तथा सर्वाधिकारवादी साम्यवाद सर्वोच्चता प्राप्त करने के लिये संघर्ष करने लगे 1990 के बाद पूर्वी यूरोप तथा सोवियत संघ से साम्यवादी शासनो को विदाई दे दी गयी तथा साम्यवादी दलों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप में कम्युनिज्म का वर्तमान संकट मुख्यतः आर्थिक मोर्चे पर असफलताओं से उपजा। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, खुलापन और निजी सम्पत्ति अचानक महत्त्वपूर्ण हो गये। शीतयुद्ध के अवसान में सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाच्योब की ऐतिहासिक भूमिका रही। इसके लिए गोर्बाच्योब को अन्तर्राष्ट्रीय जगत का असाधारण व्यक्ति माना गया।

3. **एक ध्रुवीय विष्व :–** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो शक्ति गुटों में विभाजित हो गया जिनमें एक का नेता संयुक्त राज्य अमेरीका और दूसरे गुट का नेता सोवियत संघ था। आज अमेरीका विश्व की एकमात्र महाशक्ति है। वह विश्व का एकमात्र पुलिसमैन, दादा या महानायक है। उसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता, उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं, उसे कोई ललकार या चुनौती नहीं दे सकता। उसके पास इतनी ताकत है कि वह किसी भी देश को आदेश दे सकता है और न मानने पर उसे दण्डित कर सकता है। उसके पास परमाणु अस्त्रों की ही प्रचण्ड शक्ति नही हैं अपितु उसके पास आर्थिक क्षमता भी अत्यधिक है। वह राष्ट्रों पर दबाव डालने की स्थिति में है। वह ''अनुचित व्यापार'' के बहाने राष्ट्रों के आयात पर मनमानी और एकतरफा रूकावटे लाद सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी वित्त संस्थाऐं भी उसकी मुट्ठी में है। सोवियत संघ सहित वारसा संधि के देशों के पतन तथा कुवैत–ईराक युद्ध में कुवैत की ओर से निर्णायक भूमिका निभाने के बाद अमेरीका ने उस विश्व संरचना को पूरी तरह से बदल डाला है। अमेरीका न केवल अपने को विश्व का एक मात्र सूबेदार मान रहा है बल्कि सचमुच एक सूबेदार के रूप में उभारा भी है। आज अमेरीका चाहता है कि प्रत्येक देश उसके समक्ष नतमस्तक है। इस मानसिकता का सर्वप्रथम नजारा इराक युद्ध में देखा गया, जब कुवैत के मसले पर (1991) उसने इराक के खिलाफ द्वितीय महायुद्ध से भी बड़े स्तर का अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध छेड़ दिया। उसके बाद हैती, रवांडा, बोस्निया और कोसोवो में अमेरीकी ताकत आजमाइश जारी रही। अफगानिस्तान में तालिबान का सफाया (2001) महज आतंकवाद के सफाये की कार्रवाई नहीं थी अपितु उसकी मंशा थी अफगानिस्तान में पिछलग्गू सरकार का गठन। इराक मसले (मार्च 2003) पर राष्ट्रपति बुश ने संयुक्त राष्ट्र की खुली उपेक्षा की। सुरक्षा परिषद् को नकारते हुए उसे अप्रासंगिक तक कह दिया। फ्रांस, जर्मनी को दगाबाजों की छुरी बताया। फ्रांस को नतीजे भुगतने की चेतावनी तक दे डाली।

दुष्ट परमाणु ताकतों से अमेरीका और उसके मित्र देशों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रपति जार्ज वाकर बुश 100–200 अरब डॉलर की राष्ट्रीय परमाणु सुरक्षा व्यवस्था विकसित करना चाहते थे जिसके अन्तर्गत हमलावर मिसाइल का पता लगाकर उसे बीच में ही नष्ट करने के लिए उपग्रहों, विमानों, मिसाइलो और पोतों का प्रयोग किया जाना था। इससे लगता है कि अमेरीका नये सिरे से चौधराहट दिखाना चाहता है।[2]

4. **जर्मनी का एकीकरण :–**45 वर्षों तक विभाजित रहने के बाद बिना युद्ध और संघर्ष के 3 अक्टूबर 1990 को जर्मनी एक हो गया। इससे पूर्व 9 नवम्बर 1989 को बर्लिन वाल को गिरा दिया गया था। 18 मार्च 1990 को पूर्वी जर्मनी में पहली बार स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाए हुए। 1 जुलाई 1990 को दोनों जर्मनियों का आर्थिक एकीकरण हुआ और दोनों देशों की एक मुद्रा हो गई। 3 अक्टूबर 1990 को चान्सलर हेल्मुट कोल के नेतृत्व में एकीकृत जर्मनी की नई सरकार सत्ता में आई।[3]

सैनिक गुटों का घटता प्रभाव :–द्वितीय युद्धोत्तर राजनीति सैनिक गुटों से आच्छादित थी प्रत्येक तत्कालीन महाशक्ति अपने प्रभाव क्षेत्र के विस्तार के लिए सैनिक संधियों द्वारा अधिकाधिक राष्ट्रों को अपने खेमे में शामिल करने का प्रयत्न करती थी, नाटो, सीटो, सेन्टो, एनजस ओ.ए.एस. वारसा संधियां एवं पैक्ट इसी नीति का परिणाम थे जो नवस्वतंत्र राष्ट्र महाशक्तियों की गुटीय राजनीति में शामिल नहीं हुए उन्हें अनैतिक कहा गया। परन्तु मौजूदा विश्व राजनीति में इन सैनिक गुटों का कोई विशेष महत्त्व नहीं रहा। कुछ पैक्ट तो पहले ही मृत या निष्क्रिय हो गये थे, वारसा पैक्ट को 1991 में समाप्त कर दिया गया।

इस्लामिक कट्टरवाद का मण्डराता खतरा :–मौजूदा विश्व में सुरक्षा और शांति को यदि किसी एक तत्व से वास्तविक खतरा है तो वह है इस्लामिक कट्टरवाद। इस इस्लामिक कट्टरवाद का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक हो सकता है। इसका वास्तविक क्षेत्र है तुर्की से लेकर दक्षिण में ईरान, अफगानिस्तान व पाकिस्तान और पूर्व में चीन का सीमावर्ती सिक्यांग क्षेत्र। पूर्व सोवियत संघ के मध्य एशियाई गणराज्य इस इस्लामिक बिरादरी में शामिल हो सकते है। ये देश परमाणु शक्ति सम्पन्न देश होने से इस्लामिक ब्लॉक को परमाणु शक्ति सम्पन्न गठबंधन बना देंगे। जिससे विश्व शांति को खतरा पैदा कर सकता है।[4]

इस्लामिक स्टेट इन इराक एंड सीरिया (ISIS) :– सीरियामें गृहयुद्ध के दौरान अलकायदा से अलग होकर वर्ष 2013 में अबू बकर अल बगदादी ने आई.एस.आई.एस. का गठन किया। इस संगठन को ''इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड द लेवेंट के नाम से भी जाना जाता है अल बगदादी का जन्म वर्ष 1971 में उत्तरी इराक के समारा शहर में एक सुन्नी

* Corresponding Author: डॉ. रामकल्याण मीना

समुदाय में हुआ था। पश्चिम एशिया में शिया और सुन्नी के बीच सदैव विभाजन रहा है और सुन्नी बहुमत वाले देश पश्चिम एशिया में शियाओं के प्रभाव को सीमित करने की रणनीति अपनाते है। इसलिए सुन्नी प्रधान देशों के द्वारा ईरान एवं सीरिया जैसे देशों को अलग–थलग करने का प्रयत्न किया गया। सीरिया और इराक में शिया शासको के कारण सुन्नीसमुदाय में उपेक्षा का भाव उत्पन्न हुआ। वर्ष 2003 में इराक पर अमेरीकी हमले के दौरान बगदादी अपने लगभग 30 साथियों के साथ अमेरीकी नीतियों के खिलाफ़ एक समूह बनाकर संघर्ष शुरू किया। वर्ष 2005 में दक्षिणी इराक में अमेरीकी सेना ने इसे गिरफ्तार कर लिया और वह 4 साल जेल में रहा तथा जेल में ही अलकायदा संगठन के सम्पर्क में आया। वर्ष 2010 में इराक में बगदादी आतंकी समूह का सबसे बड़ा नेता बन गया। आई.एस.आई.एस. का विस्तार भारत के लिए एक बड़ी वैचारिक चुनौती है क्योंकि आई.एस.आई.एस.की विचारधारा धर्म को बढ़ावा देने वाली विचारधारा है, जबकि भारत एक पंथनिरपेक्ष देश है। आई.एस.आई.एस. का बढ़ता प्रभाव भारत के आन्तरिक सुरक्षा हेतु गंभीर चुनौती प्रस्तुत करेगा और खबरे है कि भारत के विभिन्न भागों से आई.एस.आई.एस. में शामिल होने हेतु भारतीय नागरिक भी पहुंच गए है। आई.एस.आई.एस. के बढ़ते प्रभाव के कारण पश्चिम एशिया में लगातार संघर्ष बढ़ रहे है और अस्थायित्व बना हुआ है।[5]

क्वाड़ समूह :– यहएक चतुष्पक्षीय संगठन है जिसमें जापान, भारत, संयुक्त राज्य अमेरीका और ऑस्ट्रेलिया सम्मिलित है। क्वाड़ के सभी सदस्य लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के साथ–साथ स्वतंत्र खुले समृद्ध और बाधा रहित हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र को सुनिश्चित करने और समर्थन करने के साझा उद्देश्य के रूप में पहचाने जाते है। इस विचार को पहली बार वर्ष 2007 में जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे द्वारा प्रस्तावित किया गया था शिंजो ने स्वतंत्रता और समृद्धि के आर्क का प्रस्ताव रखा था। यद्यपि ऑस्ट्रेलिया के समूह में सम्मिलित नहीं होने के कारण यह विचार आगे नहीं बढ़ सका। क्वाड़ समान विचारधारा वाले देशों के लिए सूचनाओं के साझाकरण करने तथा पारस्परिक हितों से संबंधी नीतियों पर सहयेाग करने हेतु एक अवसर प्रदान करता है। इसके सदस्य राष्ट्र एक खुले और मुक्त इंडो–पैसफिक दृष्टिकोण को साझा करते है तथा विकास और आर्थिक परियोजनाओं के साथ–साथ समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने पर भी बल देते है। चीन इस चतुष्पक्षीय गठबंधन को एशियाई–नाटो के रूप में देखता है। चीन लम्बे समय से हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में इन लोकतांत्रिक देशों के गठबंधन का विरोध करता रहा है। चीन का मानना है कि इस समूह का उद्देश्य चीन के उत्थान को रोकना है। क्वाड़ की मजबूती एवं मालाबार युद्धाभ्यास में ऑस्ट्रेलिया को सम्मिलित करने के विचार आदि को चीन, भारत द्वारा उसके विरूद्ध उठाया गया कदम मानता है। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में चीन के बढ़ते कदमों को नियंत्रित करना न केवल अमेरीका के लिए, अपितु भारत के लिए भी आवश्यक है। भारत, चीन का पड़ोसी है और वह चीन की आक्रामकता का पहले से ही शिकार है चीन द्वारा निरन्तर सीमाओं का अतिक्रमण करना तथा सीमा पर आये दिन कोई न कोई ऐसी घटनाएँ घटती रहती है जो टकराव का कारण बनती है। इसके अतिरिक्त हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में चीन के प्रभाव में वृद्धि से भारत के लिए व्यापारिक मार्गो में रूकावट खड़ी हो सकती है। दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामक उपस्थिति ने स्वतंत्र नौवहन परिवहन को बाधित किया है। क्वाड़ के माध्यम से भारत चीन की बढ़ती शक्ति संतुलन को संतुलित करने एवं नियम आधारित विश्व व्यवस्था की पुनः स्थापना कर सकता है। क्वाड़ में सम्मिलित होकर भारत, उपमहाद्वीप क्षेत्र के लिए अपनी नीतियों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ला सकता है।[6]

बहुपक्षीय मंचों पर चीन का प्रभाव :– बहुपक्षीयमंचों जैसे संयुक्त राष्ट्र तथा चीन द्वारा स्थापित नये संस्थान जैसे एशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर इंवेस्टमेंट बैंक में चीन, भारत से अधिक प्रभावशाली है। भारत इन मंचों पर वैश्विक मामलों में खासकर जब इन संस्थानों में सुधार करने की बात आती है तो सशक्त रूप से अपनी बात रख रहा है लेकिन चीन भारतीय हितों एवं लक्ष्यों को बाधित कर रहा है। 2016 में चीन ने एनएसजी में शामिल होने के भारत के प्रयासों को विफल कर दिया था। चीन इस तरह से भारतीय हितों को बाधित करना जारी रख सकता है और इसकी शक्ति बढ़ने से ऐसा करने में उसकी क्षमता भी बढ़ रही है। चीन ने अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए बहुपक्षीय अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों जैसे एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक, ब्रिक्स (ब्राजील, चीन, भारत, रूस और दक्षिण अफ्रीका का एक समूह) और शंघाई सहयोग संगठन को स्थापित करने में मुख्य भूमिका निभाई है और वह ऐसे दूसरे संगठन भी स्थापित कर रहा है। इससे उसकी शक्ति बढ़ती जा रही है। चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारेसे जुड़ी चुनौतियां भी चिंता का विषय है। पाकिस्तान के अलावा बांग्लादेश, मालदीव नेपाल तथा श्रीलंका समेत कुछ अन्य भारतीय पड़ोंसियों के साथ चीन के रणनीतिक संबंधों में वृद्धि हो रही है। चीन इन छोटे देशों को कई प्रकार के प्रलोभन दे रहा है तथा वह इनका उपयोग भारत के क्षेत्रीय प्रमुख को कमजोर करने के लिए कर सकता है। चीन की आर्थिक शक्ति उसे दुनिया भर में अपने प्रभाव को फेलाने की सुविधा देती है। चीन ने अपने हितों को बढ़ावा देने के लिये अपनी सहायता निधि तथा व्यापार नीतियेां का उपयोग किया है। यह कल्पना करना मुश्किल नहीं है कि वह इन साधनों का उपयोग कर विशेष रूप से विकासशील देशों पर दबाव डाल सकता है कि वे चीन का समर्थन करे तथा भारत के साथ संभावित द्विपक्षीय समझौते नहीं करे। जैसे चीन ने नार्वे तथा दक्षिण कोरिया को अपने हितों के लिए प्रतिकूल माना, उन्हें दण्डित करने के लिए उनका आर्थिक बहिष्कार किया है। चीन ने फिलीपींस के साथ अपने संबंधों तथा विदेशी नीति उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए सहायता निधि का सहारा लिया है।[7]

विचारधारात्मक एकल ध्रुवीकरण :– समाजवादीसोवित संघ के विघटन तथा पूर्वी यूरोप के देशों में समाजवादी शासनों के पतन के बाद साम्यवाद की विचारधारा को गहरा आघात पहुंचा। इसके साथ विश्व भर में उदारीकरण, उदारवाद, लोकतंत्र, विकेन्द्रीकरण तथा बाजार अर्थव्यवस्था के अपनाए जाने से साम्यवाद की लोकप्रियता और भी कम हो गई। यहां

* Corresponding Author: डॉ. रामकल्याण मीना

तक कि चीन ने भी समाजवादी अर्थव्यवस्था को त्याग दिया जबकि उसने पुराने राजनीतिक सत्तावाद को अपनाए रखा। इसने अपने आपको अकेला अनुभव किया। यही स्थिति क्यूबा तथा वियतनाम की भी हुई इसके साथ ही उदारवाद, मानव अधिकार, लोकतंत्रीकरण, विकेन्द्रवाद तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के सर्वमान्य सिद्धांत विचारधारात्मक एकलवाद की विशेषता बन गये।

एशिया की राजनीति में परिवर्तन :– सोवियत संघ के विघटन के फलस्वरूप एशिया की राजनीति में भी गहन परिवर्तन हुआ है। विशेषकर भारत ने अपना ''एक भरोसे योग्य तथा समय की कसौटी पर ठीक उतरा हुआ मित्र'' खो दिया। इसकी विदेश नीति को रूस तथा अन्य स्वतंत्र गणराज्यों के साथ संबंधों का पुनर्निर्धारण करना पड़ा। रूस तथा स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रमण्डल के साथ सामाजिक, आर्थिक संबंधों के निर्धारण की आवश्यकता, भारतीय विदेश नीति के लिये चुनौती बन गई। भारत को अमेरीका के साथ अपने संबंधों को सुधारना आवश्यक हो गया। इसकी आर्थिक आवश्यकताओं तथा इस द्वारा अपनाए गये आर्थिक सुधारों के कारण भी यह आवश्यक हो गया कि भारत–अमेरीकी संबंधों में सुधार किया जा सके। दोनों देशों की नौ सेनाओं द्वारा मई 1992 में हिन्द महासागर में संयुक्त अभ्यास किये गये। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में इसराईल के पक्ष में मतदान किया, इसराईल के साथ पूर्ण कूटनीतिक संबंध स्थापित किए तथा खाड़ी संकट तथा खाड़ी युद्ध के समय भारत ने संयुक्त राष्ट्र में अमेरीका के साथ मिलकर निर्णय लिये।[8]

यूरोप के एकीकरण की दिशा में बढ़ते चरण :– 11 दिसम्बर1991 को सम्पन्न मैस्ट्रिच संधि यूरोपीय एकीकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण सीमा चिह्न है। इस संधि के तहत यूरोपीय समुदाय के देशों में समान मुद्रा का चलन हुआ। संधि के अनुसार समान मुद्रा के साथ–साथ 1 जनवरी 1999 से एक यूरोपीय केन्द्रीय बैंक की भी स्थापना की गई। 1 मई 2004 को यूरोप के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना हुई और 10 नए राज्यों ने यूरोपीय संघ की सदस्यता ग्रहण की जिनमें से आठ देश तो पूर्व सोवियत गुट के सदस्य रह चुके है। ये देश है– हंगरी, साइप्रस, चैक गणराज्य, एस्तोनिया, लाटविया, लिथुआनिया, माल्टा, पौलेण्ड, स्लोवाकिया और स्लोवेनिया। यूरोपीय संघ की सदस्य संख्या बढ़कर 25 हो गई है। वर्तमान में यूरोपीय संघ की सदस्य संख्या बढ़कर 28 हो गयी है।[9]

नाटो का पूर्व की और फेलाव :– रूस ने 1991 में नाटों के साथ जुड़ने की इच्छा प्रकट की थी पर उस पर अमल नहीं हो सका। हेलसिकी शिखर सम्मेलन में क्लिंटन और येल्तिसिन के बीच जिन 5 समझौतों की घोषणा हुई उनमें नाटों और रूस के बारे में समझौता भी शामिल है। राष्ट्रपति क्लिंटन की पहल पर पूर्वी यूरोप के तीन देशों–पौलेण्ड, हंगरी और चैक गणराज्य को जुलाई 1997 में नाटो का सदस्य बना दिया गया। विस्तार की इसी योजना के अन्तर्गत 29 मार्च 2004 को नाटो में यूरोप के 7 नए देशों को सम्मिलित कर लिया गया इन राज्यों में से 6 राज्य ऐसे है जो साम्यवादी गुट तथा वारसा पैक्ट के सदस्य रह चुके है। ये राज्य है– बुल्गारिया, लाटविया, एस्ओनिया, रोमानिया, लिथुआनिया तथा स्लोवाकिया। अब नाटो रूस के दरवाजे पर दस्तक दे रहा है।[10]

गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता:– मौजूदा महाशक्ति से प्रभावित विश्व में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता उसी रूप में बनी रहेगी जिस रूप में उसकी प्रासंगिकता द्वि–ध्रुवीय अथवा बहु–ध्रुवीयविश्व में बनी हुई थी। गुटनिरपेक्षता आन्दोलन भले ही खाड़ी युद्ध के समय एक मूक दर्शक, निष्क्रिय या मृतप्रायः प्रतीत होता रहा हो, परन्तु उसकी प्रासंगिकता तब तक बनी रहेगी जब तक छोटे राष्ट्रों की राजनीतिक स्वतंत्रता को बनाये रखने, विकासशील राष्ट्रों के विकास संबंधी मुद्दे, उन्नत प्रौद्योगिकी के हस्तान्तरण के मुद्दे, उत्तर–दक्षिण व दक्षिण सहयोग के मुद्दे, पर्यावरण की सुरक्षा संबंधी मुद्दे, स.रा. संघ के लोकतांत्रिकरण के मुद्दे, क्षेत्रीय संघर्ष व टकराव के मुद्दे, पूर्ण निरस्त्रीकरण प्राप्त करने के मुद्दे बने रहेंगे।

आर्थिक मुद्दों को अहमीयत :– अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के वर्तमान युग में राजनीति का प्रचलन नहीं रहा इसमें अर्थ का प्रचलन अधिकाधिक होने लगा है। सुनन्दा के दत्ता रे का मत है कि यह ''आर्थिक व्यक्ति का युग है।''[11] राष्ट्रों के बीच संबंध व्यापार, आर्थिक लाभ और लेन–देन पर आधारित हो गए है। इन संबंधों में राजनीतिक, मूल्यों, सिद्धांतों या विचारधारा का कोइ मतलब नहीं रहा। कोई राष्ट्र मूल्यों के आधार पर दूसरे से व्यापार करने से इन्कार नहीं करता। मोरक्कों की राजधानी मराकेश में 15 अप्रैल 1994 को राष्ट्रों के बीच सम्पन्न हुई गैट संधि इन संबंधों की बाईबल है और विश्व व्यापार संगठन इसका चर्च, मस्ज़िद या मन्दिर है।[12]

गरमाता शस्त्र बाजार :– वर्तमानसमय में शस्त्र बाजार गरमा रहा है अब तक शस्त्र व्यापार पर पश्चिमी देशों विशेषकर अमेरीका का एकाधिकार रहा है। उन्होंने शस्त्रों के निर्यात द्वारा विश्व के अनेक क्षेत्रों को अशान्त बनाया है। अब रूस भी शस्त्र व्यापार में कूद पड़ा है। अमेरीका के दबाव के बावजूद रूस ने भारत को दो जल परमाणु विद्युत रियक्टर देने का निर्णय लिया है रूस ने चीन को किलो किस्म की पनडुब्बिया भी बेची है। जितनी मात्रा में शस्त्र व्यापार गरमायेगा उतनी मात्रा में गलाकाट प्रतियोगिता जन्म लेगी, समस्याये उलझेगी और विश्व संतुलन बिगड़ेगा।[13]

नये संगठनों का आविर्भाव :– वर्तमान में राष्ट्रोंके आपसी सहयोग के नये संगठनों (समूहों) का निर्माण हुआ है। इनके सार्क, आसियान, ग्रुप–8, ग्रुप–15, ग्रुप–24 (एपेक) नाफ्टा, हिमतक्षेस, बिम्बटेक, डी–8, शंघाई सहयोग संगठन, एशिया कोऑपरेशन डायलॉग, जी–3 विश्व सामाजिक मंच, खाड़ी सहयोग परिषद्, युनासुर, जी–20, ब्रिक्स, आदि।[14]

* Corresponding Author: डॉ. रामकल्याण मीना

दक्षिण का उदय :– आज दक्षिण का उदय अपनी गति और आकार में अभूतपूर्व है। 21 वीं सदी में दक्षिण का उदय सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, दूरसंचार और राष्ट्रीय अभिशासन में बड़ी प्रगति के साथ–साथ हुआ है। इसके मानव विकास पर गहरे प्रभाव पड़े है अत्यधिक गरीबी में गुजर–बसर कर रहे लोगों का अनुपात 1990 में 43.1 प्रतिशत के मुकाबले 2008 में घटकर 22.4 प्रतिशत रह गया। अकेले चीन में ही 50 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी से बाहर निकल पाए। आज कुल वैश्विक आर्थिक निर्गत में दक्षिण की हिस्सेदारी लगभग आधी है।[15]

निष्कर्ष :– अन्तर्राष्ट्रीयराजनीति गतिशील है उसमें द्रुतगति से बदलाव आ रहा है। जहां एक ओर पिछले दो दशकों में नई प्रवृत्तियां उभरी है वहीं दूसरी ओर मुद्दे भी बदले है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. यू आर घई, के.के. घई, ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति सिद्धांत एवं व्यवहार'' न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी माई हीरा गेट जालन्धर, 2015, पृ. 77
2. बी.एल. फड़िया, कुलदीप फड़िया, ''अन्तर्राष्ट्रीय संबंध'' साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, 2018, पृ. 251
3. पी.के. चड्ढा, ''अन्तर्राष्ट्रीय संबंध'' आदर्श प्रकाशन जयपुर, 1998–99, पृ. 629
4. चड्ढ़ा वही, पृ. 631
5. राजेश मिश्रा, ''भूमण्डलीकरण के दौर में भारतीय विदेश नीति'' सरस्वती IAS मुखर्जी नगर दिल्ली, 2015, पृ. 197
6. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, नई दिल्ली, सितम्बर 2020, पृ. 76
7. सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, नई दिल्ली, जून 2018, पृ. 28
8. यू.आर. घई वही, पृ. 80
9. फड़िया वही, पृ. 255
10. फड़िया वही, पृ. 254
11. चड्ढ़ा वही, पृ. 632
12. चड्ढ़ा वही, पृ. 632
13. चड्ढ़ा वही, पृ. 634
14. फड़िया वही, पृ. 257
15. फड़िया वही, पृ. 257

* Corresponding Author: डॉ. रामकल्याण मीना